

# डॉ. क्रेग कीनर , रोमन्स, व्याख्यान 5, रोमियों 2:1-3:23

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 2:1-3:23 पर सत्र 5 है।

मैं सभी रोमनों को उसी स्तर के विवरण में नहीं लिखने जा रहा हूँ जैसा मैंने पहले अध्याय में किया था।

अक्सर जब मैं किसी किताब में पढ़ता हूँ, तो मैं पहले भाग को अधिक विस्तार से लिखूंगा क्योंकि हम दिखा सकते हैं कि अगर हम चाहें तो हम कितने विस्तार में जा सकते हैं। लेकिन फिर आप हर चीज़ पर इतना विस्तार से अध्ययन करते हैं, तो कोर्स बहुत लंबा हो जाता है।

तो, अब रोमियों 2 की ओर बढ़ते हैं, जो रोमियों 1 को मानता है। रोमियों 1 एक अर्थ में रोमियों 2 के लिए एक सेटअप है, श्लोक 18 से शुरू करके, अन्यजातियाँ खो जाती हैं। खैर, अब वह दिखाने जा रहा है कि वास्तव में हर कोई हार गया है, रोमन 2।

भगवान का निष्पक्ष निर्णय, अध्याय दो, श्लोक एक से 16 तक। डायट्रिब एक सामान्य व्याख्यान शैली थी जहाँ आप इसे भी पाते हैं, आप इसे इस खंड में पाते हैं, आप इसे अध्याय तीन में पाते हैं, श्लोक एक से नौ तक, अध्याय नौ और श्लोक 14 से 24 में पाते हैं। यह उस प्रकार की व्याख्यान-शैली है जिसका प्रयोग कभी-कभी स्टोइक्स द्वारा किया जाता है।

एपिक्टेटस अपने लेखन में इसका उपयोग करता है। यह ऐसा है जैसे आप अपने दर्शकों को शामिल करने के तरीके के रूप में अलंकारिक प्रश्न पूछते हैं। और कभी-कभी आप किसी को सीधे संबोधित करते हैं, आपके पास एक काल्पनिक वार्ताकार होता है, जो आपको अपनी स्थिति के खिलाफ संभावित तर्कों को ध्वस्त करने की अनुमति देता है।

तो, आप एक तर्क देते हैं, ठीक है, लेकिन आप यह कह सकते हैं, और फिर आप उस तर्क को ध्वस्त कर देते हैं, बिना इस बात की चिंता किए कि कोई वास्तविक वार्ताकार कुछ ऐसा सामने लाएगा जिसके बारे में आपने नहीं सोचा था। लेकिन किसी भी मामले में, पॉल ने आराधनालयों में पर्याप्त बहस की थी, उसने संभवतः कई अलग-अलग तर्क सुने होंगे। यहाँ वार्ताकार, क्या श्लोक तीन में वार्ताकार यहूदी है, या क्या ऐसा केवल श्लोक 17 में होता है जहाँ वार्ताकार स्पष्ट रूप से यहूदी है? खैर, शायद वह पूरे अध्याय में परोक्ष रूप से एक ही वार्ताकार को संबोधित कर रहा है।

तो, श्लोक 17 के प्रकाश में, यदि आपको पहले इसका एहसास नहीं हुआ था, तो आपको एहसास होता है कि आपको वापस जाना होगा और पूरे अध्याय को उसी तरह पढ़ना होगा। क्यों? पौलुस कहता है, पद दो में हम जो जानते हैं, उसके कारण हम यही जानते हैं। श्लोक चार, यह वही है जो वार्ताकार को पता होना चाहिए।

और विषय वस्तु की निरंतरता भी है। 2:9, और 10, और 12 से 15 में 2:25 से 29 तक विषय वस्तु की निरंतरता है। लेकिन यह पहले खंड में सूक्ष्म है।

बाद में क्या होने वाला है, इसके लिए पॉल अभी भी अपना बयानबाजी का जाल तैयार कर रहा है। वह कहते हैं, हे यार, अध्याय दो में, श्लोक एक में, और श्लोक तीन में, और अध्याय नौ में, श्लोक 20 में, यह यहाँ एक अलंकारिक अभ्यास को उजागर करने का एक तरीका था जिसे एपोस्ट्रोफ कहा जाता है। यह एक सामान्य अलंकारिक उपकरण था।

और हम देखते हैं कि 1:29 से 31 में पापियों ने स्पष्ट रूप से स्वयं की निंदा की है। वे मानते हैं कि ऐसा व्यवहार मृत्यु के योग्य है। वे बेहतर जानते हैं और वे दो, तीन और पांच में दैवीय निर्णय के पात्र हैं।

नैतिक रूप से ढीले अन्यजाति स्वयं को क्षमा कर देते हैं। सख्त यहूदी स्वयं की निंदा करते हैं, लेकिन 2:15 में, सभी की निंदा की जाती है। यह भाषा इस सन्दर्भ में अन्यत्र भी प्रकट होती है।

रोमियों 1:32 में, वे स्वयं को क्षमा करते हैं। 21 वे ऐसा करनेवालोंको दोषी ठहराते हैं, परन्तु दोनों ही दृष्टिकोण पापियोंके हैं। 1:20 अन्यजातियों के लिए, 2:15 उसके यहूदी श्रोताओं के लिए।

पापियों के दोनों दृष्टिकोण अक्षम्य हैं। पॉल एक न्यायशास्त्र बनाता है। एक न्यायवाक्य एक प्रमुख आधार, एक लघु आधार और इसलिए, एक निष्कर्ष के साथ एक तर्क है।

वे ये पाप करते हैं, श्लोक एक, ऐसे पाप भगवान के न्याय के योग्य हैं, श्लोक दो, और 1:32 में भी, अध्याय एक का अंतिम श्लोक। इसलिए, पद तीन में, वे परमेश्वर के न्याय से बच नहीं पाएंगे। यह अपने आप में एक अलंकारिक जाल है।

अधिकांश विचारकों, अधिकांश नैतिकतावादियों ने इस तरह की असंगतता की निंदा की, चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी, लेकिन वह 2:17 से 25 में असंगतता के खिलाफ, पाखंड के खिलाफ एक अधिक स्पष्ट चुनौती देने जा रहे हैं। यहां यह खंड, शुरुआत में न्यायशास्त्र 14, 3 और 4 और 10 और 13 में सांस्कृतिक मतभेदों का न्याय करने के खिलाफ उनकी चेतावनी के लिए तैयार करता है। आप कौन होते हैं निर्णय करने वाले? खैर, अगर यह पापों के लिए सच है, तो यह अन्य चीजों के लिए भी सच होना चाहिए।

अध्याय दो, श्लोक चार और पाँच में हम ईश्वर की दया के बारे में पढ़ते हैं। ईश्वर की दया पश्चाताप के लिए जगह देती है। यहां भगवान की दया धार्मिकता लाती है, न कि केवल पापियों को उनके पापों में आशीर्वाद देती है।

श्लोक चार में यह बिल्कुल स्पष्ट है। यहूदी श्रोताओं को पता होना चाहिए कि ईश्वर की दयालुता ही लोगों को पश्चाताप की ओर ले गई, 2.4। और उन लोगों के संदर्भ में जो परमेश्वर की ओर मुड़ने से इनकार करते हैं और जो परमेश्वर की ओर लौटते हैं, पॉल स्वर्ग में कुछ जमा करने की भाषा का उपयोग करता है। यहूदी लोग स्वर्ग में पुरस्कार जमा करने की बात करते थे।

आप सुसमाचार में यीशु को यही कार्य करते हुए सुनते हैं। आपके पास यह टोबिट अध्याय चार की यहूदी अपोकलिफ़ल पुस्तक में है, जो स्वर्ग में पुरस्कारों को संजोकर रखता है। लेकिन यहाँ, श्लोक पाँच में ये लोग जो भड़का रहे हैं वह क्रोध है।

छंद 6 से 11 तक, आपके पास एक चियास्म, एक चियास्टिक संरचना है। कभी-कभी आप इसका उच्चारण चियास्म करते हैं, लेकिन कुछ विद्वानों ने वास्तव में इसकी अति कर दी है। उन्होंने चीजों का असमान रूप से उपयोग करके बाइबिल में मौजूद हर चीज को एक विचित्रता में बदलने की कोशिश की है।

जैसे वे एक पैराग्राफ से एक या दो शब्द निकालेंगे और फिर बाद में किसी चीज़ से उसकी तुलना करेंगे और बाकी पैराग्राफ को अनदेखा कर देंगे। लोग चीज़ों को ज़बरदस्ती चिस्टिक संरचना में ढाल सकते हैं, लेकिन यह अधिक प्रेरक चीज़ों में से एक है। छंद छह, भगवान प्रत्येक को उनके कार्यों के अनुसार बदला देते हैं।

और फिर 2:11 में, क्योंकि ईश्वर निष्पक्ष है। इसलिए, प्राचीन साहित्य में ईश्वर की निष्पक्षता एक प्रमुख विषय थी। लेकिन यदि आप एक चियास्टिक संरचना बनाने जा रहे हैं, तो यह एक उलटी समानांतर संरचना है।

तो, वह एक नोट से शुरुआत करता है। हम अक्सर इसे इस तरह से लेबल करते हैं। यह A है और फिर अंतिम भाग A अभाज्य है।

अगला नोट बी होगा और फिर आपके पास बी प्राइम होगा और फिर बीच में सी या सी और सी प्राइम होगा। या हो सकता है कि आपके पास इससे अधिक पत्र हों। या कभी-कभी यह सिर्फ ए, बी, बी, ए होता है। लेकिन वैसे भी, भगवान उन्हें उनके कार्यों के अनुसार भुगतान करते हैं।

श्लोक 6, ईश्वर निष्पक्ष है, और श्लोक 11।

श्लोक 7 और श्लोक 10.

श्लोक सात, उन लोगों के लिए जो महिमा और सम्मान की खोज में भलाई करते हैं। और पद 10, परन्तु भलाई करनेवालोंको महिमा और आदर।

और फिर बीच में, श्लोक आठ और नौ, परन्तु जो सत्य की अवज्ञा करते हैं उन पर क्रोध, और जो बुरे काम करते हैं उन पर कष्ट।

तो, वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यह ईश्वर की निष्पक्षता का हिस्सा है, ईश्वर की निष्पक्षता का हिस्सा है। हाँ, वह धर्मियों को प्रतिफल देगा। और हाँ, वह दुष्टों का न्याय करेगा।

और इसलिए, ठीक है, आप अध्याय एक में यही देखते हैं। परमेश्वर की धार्मिकता स्वर्ग से प्रकट होती है और यह उन लोगों पर प्रकट होती है जो उस पर भरोसा करते हैं। और उसका क्रोध उन पर है जो मूरतों के पीछे चलते हैं, और निन्दा, डींगें मारना, इत्यादि सब प्रकार के पाप भी करते हैं।

भगवान की जातीय निष्पक्षता, 2, 6, और 11. ठीक है, 2, 9, और 10 स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वह यहूदी और गैर-यहूदी दोनों का न्याय करेगा। और बाद में, इस अध्याय में श्लोक 12 से 15 में, दोनों मूसा के कानून के साथ और केवल प्राकृतिक कानून के साथ।

जिनके पास अधिक रहस्योद्घाटन है वे अधिक जवाबदेह हैं। पहले उद्धृत आमोस अध्याय तीन और पद दो को याद रखें। मैंने पृथ्वी भर के कुलों में से केवल तुम्हें ही चुना है।

इसलिये मैं तुम्हारे अधर्म के कामोंके कारण तुम्हारा न्याय करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। यीशु अपनी शिक्षाओं में यह भी कहते हैं, कि जो सेवक अपने स्वामी की इच्छा जानता था और उसे नहीं करता था, उसे बहुत कोड़े मारे जायेंगे। जो नौकर मालिक की इच्छा नहीं जानता था और उसने उसका पालन नहीं किया, उसे कम मार पड़ेगी।

यहूदी लोग जानते थे कि ईश्वर लोगों का न्याय उनके कर्मों के आधार पर करता है। यहाँ आश्चर्य की बात यह है कि भगवान अपने लोगों का पक्ष नहीं लेते। वास्तव में, पॉल का कहना है कि उनका मूल्यांकन अधिक सख्ती से किया जाता है क्योंकि वे बेहतर जानते हैं।

और आज यह उन लोगों पर लागू होगा जो चर्च में पले-बढ़े हैं या ऐसे लोग जिन्होंने सुसमाचार और शिक्षाओं के बारे में अधिक सुना है। अधिक सख्ती से न्याय करें क्योंकि वे बेहतर जानते हैं, 2.12 से 15, 3.20, 7.7 से 11। कानून का ज्ञान आपको कानून के पालन के लिए अधिक जिम्मेदार बनाता है।

सभी ने निष्पक्षता को स्वीकार किया। यहूदी और अन्यजाति दोनों ने कहा कि देवता बनने का यही सही तरीका है। पुराने नियम में अक्सर एक न्यायाधीश के रूप में ईश्वर की निष्पक्षता की बात की जाती थी, लेकिन इसे आमतौर पर जातीय संदर्भ में लागू नहीं किया जाता था।

खैर, वह अन्यजातियों का उसी तरह न्याय करेगा जैसे वह हमारा न्याय करेगा और इसके विपरीत भी। यहाँ अनन्त जीवन के लिए अच्छे कार्य कौन करता है? इस पर विद्वान अक्सर बहस करते हैं। खैर, संदर्भ में, सारी मानवता खो गई है, 3.9 और 3.23। तो यहां इस मार्ग के बारे में जो विचार दिए गए हैं वे यहां दिए गए हैं।

यह लोगों के एक वास्तविक लेकिन छोटे वर्ग को संदर्भित करता है, जैसा कि यहूदी लोग तब सोचते थे जब वे धर्मी अन्यजातियों के बारे में सोचते थे, जो व्यभिचार नहीं करते थे, और जो यौन रूप से अनैतिक नहीं थे। ठीक है, उन्होंने सोचा कि यह बहुत सारे अन्यजाति नहीं हैं, लेकिन जो लोग अक्सर ईश्वर होते हैं वे आराधनालयों या किसी भी चीज़ में आने से डरते हैं। यहां लोगों का एक वास्तविक लेकिन बहुत छोटा वर्ग या लोगों का एक काल्पनिक वर्ग, शायद अलंकारिक उद्देश्यों के लिए, संभवतः अध्याय 10 और श्लोक 5 जैसा कुछ, जहां वह कहते हैं, जो लोग कानून का पालन करेंगे वे इसके अनुसार रहेंगे और फिर दिखाने के लिए आगे बढ़ते हैं, ठीक है, वास्तव में आप इस तरह से न्यायसंगत नहीं हैं क्योंकि आप कानून के अनुसार नहीं रहते हैं।

गलातियों अध्याय 3 और पद 11। या तीसरा संभावित दृष्टिकोण जो पेश किया गया है वह यह है कि यह ईसाइयों को संदर्भित करता है क्योंकि, पद 29 में, आपने इसे स्पष्ट रूप से यीशु में विश्वासियों पर लागू किया है। कौन सा दृश्य सर्वोत्तम है? ठीक है, मैं यहां आपको अपना विचार दे रहा हूँ।

जो कोई भी पढ़ा रहा है, जब वह आपको सबसे अच्छा दृष्टिकोण बताता है, तो उसका मतलब यह होता है कि वह उसका दृष्टिकोण है। और यह उन बातों के साथ सच है जो मैंने पिछले व्याख्यान और आने वाले व्याख्यानों में भी कही थीं। मैं बस पाठ को सर्वोत्तम ढंग से समझाने का प्रयास कर रहा हूँ।

कौन सा दृश्य सर्वोत्तम है? सिद्धांततः, धर्मी लोग बच जायेंगे। व्यवहार में, यह वे लोग हैं जो मसीह में हैं जो धार्मिकता से जीने में सक्षम हैं, अध्याय 8 छंद 2 से 4। लेकिन यहां पॉल जिस बात को रेखांकित कर रहा है वह यह है कि वह भगवान की जातीय निष्पक्षता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। जो लोग अपने आप को नैतिक रूप से श्रेष्ठ होने का दावा करते हैं, वे क्रोध का भण्डार रखते हैं, अध्याय 2 और पद 5। गैर-यहूदी कम से कम कभी-कभी नैतिक रूप से सही कार्य करते हैं।

यहूदी कभी-कभी ऐसा नहीं करते थे। और वह कह रहा है कि केवल ईसाई ही इसे पूरी तरह से पूरा कर सकते हैं। अब, आप और मैं दोनों ऐसे ईसाइयों को जानते हैं जो हमेशा इसे पूरा नहीं करते हैं, जिनमें शायद हम भी शामिल हैं।

लेकिन मसीह में, हम ऐसा करने में सक्षम हैं क्योंकि यह मसीह हमारे माध्यम से जीवित है, हम स्वयं नहीं। और वह हमें अपनी छवि में और अधिक ढाल रहा है। मसीह के बिना, विवेक का प्राकृतिक नियम मूसा के बाहरी कानून की तरह कार्य करता है।

यह उतनी दूर तक नहीं जाता है, और उतना अधिक प्रकट नहीं करता है, लेकिन यह हमारे कुछ पापों की पहचान कर सकता है। लेकिन विवेक, मूसा के कानून की तरह, यह पाप की पहचान कर सकता है, लेकिन यह हमें धर्मी बनाने के लिए लोगों के दिलों को नहीं बदलता है। आप इसे निम्नलिखित चार्ट में देख सकते हैं।

धर्मी लोग अध्याय 2 और पद 7 में अच्छे कार्य करते हैं। खैर, ये कानून 3:20, 27, और 28 के यहूदी कार्य नहीं हो सकते। धर्मी सहन करते हैं, विश्वासी सहन करते हैं। धर्मी लोग महिमा की खोज करते हैं 2:7. कोई भी परमेश्वर की खोज नहीं करता 3:11. किसी को गलत तरीके से धार्मिकता की तलाश नहीं करनी चाहिए।

अध्याय 10 पद 3 और 20। धर्मी लोग महिमा और सम्मान की खोज करते हैं 2:7 और 10। मानवता ने परमेश्वर की महिमा खो दी 3:23। महिमा विभिन्न अंशों में विश्वासियों की प्रतीक्षा कर रही है।

धर्मी को अनन्त जीवन मिलता है। खैर, यीशु में विश्वास करने वालों को अनन्त जीवन मिलता है। धर्मी को शान्ति मिलेगी।

खैर, मानवता शांति 3:17 को नहीं जानती, लेकिन विश्वासियों को शांति 5:1, 8:6, 14:17 मिलेगी। धर्मी अच्छा करते हैं 2:7 और 10। दुष्ट लोग अच्छा नहीं करते, भले ही उनके पास कानून 7:18 और 19 हो। विश्वासियों को वही करना चाहिए जो अच्छा है 12:9 और 21 इत्यादि।

भलाई करने वालों में यहूदी और यूनानी दोनों शामिल हैं 2:10. 3:9 में यहूदी और यूनानी दोनों पाप के अधीन हैं और विश्वासियों के समुदाय में यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं 1:16, 9:24 और 10:12। स्वभाव से आज्ञाकारी अन्यजातियों के दिलों में कानून 2:14 से 15। खैर, यहां विचार यह है कि यह उन ईसाइयों को संदर्भित करता है जिनके दिल में कानून है या यह उस विवेक को संदर्भित करता है जो सभी मनुष्यों में है, मुझे क्या लगता है कि कौन सा बेहतर है ? ठीक है, व्यवहार में, ईसाइयों, आपके पास यह 8:2 से 4 में है जहां मसीह यीशु में जीवन की आत्मा के कानून ने आपको पाप और मृत्यु के कानून से मुक्त कर दिया है, यिर्मयाह 31 छंद 31 से 34 को दोहराते हुए जहां कानून है नई वाचा के भाग के रूप में हमारे हृदयों में लिखा गया है। यह 2:29 के लिए तैयारी करता है जहां यह उन लोगों के बारे में बात कर रहा है जो मसीह की सेवा करते हैं, लेकिन ईसाइयों के पास भी लिखित कानून तक पहुंच थी।

इसलिए, सिद्धांत रूप में, यह ईसाइयों को संबोधित नहीं कर रहा है। यह संबोधित है, आप जानते हैं, यह कह रहा है कि ये वे लोग हैं जिनके पास लिखित रूप में कानून नहीं है, लेकिन उन्होंने इसे अपने दिलों में लिखा है। व्यवहार में, ईसाइयों के दिल में यह होगा, लेकिन सिद्धांत रूप में, यह मानवता में जन्मजात प्राकृतिक कानून है।

ईश्वर का रहस्योद्घाटन और रचना, जैसा कि अध्याय 1 श्लोक 20 में है, उनका यह रहस्योद्घाटन स्वयं में है या इसका अर्थ आपस में हो सकता है, लेकिन मनुष्यों के भीतर भी इसका अर्थ हो सकता है, अध्याय 1 श्लोक 19 में। विवेक की ग्रीको-रोमन धारणा, अध्याय 9 पद 1 में। यदि आपको ऐसा लगता है कि मैं दोनों विचारों को फैला रहा हूं, तो शायद मैं ऐसा ही हूं। प्रकृति दृष्टिकोण का नियम ग्रीको-रोमन स्रोतों में व्यापक था।

हमने पहले ही अध्याय 1 छंद 26 और 27 में प्रकृति पर आधारित तर्क देखा है। यहां तक कि यहूदी विचारकों ने भी नूह के कानूनों के बारे में बात की थी और प्रवासी यहूदियों ने भी प्रकृति में एक कानून के बारे में बात की थी। यह प्राचीन काल में एक व्यापक अवधारणा है, बहुत सारी सामग्री है।

2:15 में, वह उनके विचारों के विभाजित होने की बात करता है, अंततः उन पर आरोप लगाता है या उनका बचाव करता है। यह पूर्वाभास दे सकता है कि 7:15 से 23 तक आपको क्या मिलने वाला है, जहां आपके पास नैतिक रूप से विभाजित व्यक्ति है जो जानता है कि क्या सही है लेकिन वह नहीं कर सकता जो सही है। उस मामले में, वे जानते हैं कि कानून के कारण क्या सही है।

उनके पास अधिक ज्ञान है, लेकिन वे अभी भी विभाजित हैं। पाखंड का संकेत, 2:17 से 24 तक। यह अतिशयोक्तिपूर्ण अतिशयोक्ति है।

मैंने पहले ही इसके बारे में रिडक्टियो एड एब्सर्डम के रूप में बात की थी। यह सिर्फ बात को आगे बढ़ाता है। यह इसे चरम सीमा तक ले जाता है।

प्राचीन काल में यह अपनी बात स्पष्ट करने का एक सामान्य तरीका था और लोग इसे अलंकारिक पद्धति के रूप में समझते थे। अधिकांश यहूदी लोग व्यभिचार नहीं करते थे। अधिकांश यहूदी लोग मंदिरों को नहीं लूटते थे, विशेषकर वे मंदिरों को नहीं लूटते थे।

लेकिन मुद्दा यह है कि यहूदी जातीयता और कानून पर कब्ज़ा अन्यजातियों पर श्रेष्ठता की गारंटी नहीं देता है। वह अध्याय तीन, छंद नौ से 20 तक सभी यहूदियों के बारे में बात कर रहा है, लेकिन यहां वह एक, अपने काल्पनिक वार्ताकार पर ध्यान केंद्रित करता है। प्रकृति का नियम.

कुछ अन्यजाति प्रकृति के नियम के कारण सही कर सकते हैं। कभी-कभी वे सही भी कर सकते हैं। लेकिन यहां यह यहूदी आपत्तिकर्ता, यह काल्पनिक वार्ताकार, तीन या चार बार कानून के महत्व का दावा करता है।

2:17 कानून का घमंड, 2:18, 2:22, 2:23. और फिर भी यह वार्ताकार कानून तोड़ता है। श्लोक 23 में अध्याय दो, टोरा में शेखी बघारता है। टोरा अध्ययन यहूदी शिक्षकों की धर्मपरायणता का केंद्र था, 2:17 से 20 तक।

हम इसे यहां केंद्रीय पाते हैं, लेकिन यह यहूदी शिक्षकों की धर्मपरायणता का भी केंद्र था। लेकिन आप बौद्धिक और आध्यात्मिक गौरव जैसी किसी चीज़ का जोखिम उठाते हैं। और वास्तव में, मुझे कहना होगा कि कभी-कभी सेमिनरी, जब वे सेमिनरी से स्नातक होते हैं, तो कभी-कभी श्रेष्ठता की भावना के साथ स्नातक होते हैं।

सेमिनरी का उद्देश्य आपको इस तरह से सुसज्जित करना है, और ये वीडियो आपको इस तरह से सुसज्जित करने के लिए हैं कि आप सक्षम महसूस कर सकें। लेकिन अपनी योग्यता पर संतुष्टि के साथ, आपको सावधान रहना होगा कि यह कुछ ऐसा न बन जाए जहां आप अन्य लोगों को नीची दृष्टि से देखने लगें। यह आपके लिए ईश्वर का उपहार है इसलिए आप इसका उपयोग अन्य लोगों की सेवा के लिए कर सकते हैं।

बौद्धिक और आध्यात्मिक गौरव का खतरा टोरा शिक्षकों के लिए एक जोखिम था, लेकिन यह एक जातीय मुद्दा नहीं है जो यहूदी लोगों तक ही सीमित है। यह कुछ ऐसा है जो किसी के साथ भी हो सकता है क्योंकि हमें अपने धार्मिक ज्ञान या किसी भी चीज़ पर गर्व होता है। कुछ लोग ऐसी दक्षता का उपयोग अभ्यास में विफलता या हमारे जीवन के किसी अन्य क्षेत्र में विफलता की चिंता को कम करने के लिए करते हैं।

पूर्वजों ने उन लोगों का तिरस्कार किया जो अयोग्य थे। उन्होंने उन लोगों की प्रशंसा की जिनके पास महान योग्यताएँ थीं। लेकिन पॉल के लिए, अपने कार्यों पर घमंड करना बनाम भगवान की गतिविधि पर घमंड करना पाप था। आप इसे 3:27, 4:2, 5:2-3, 5:11, और 15:17 में देखते हैं। यह वापस आता रहता है। शेखी बघारना सही नहीं है क्योंकि इससे हमारा ध्यान परमेश्वर की बजाय हम पर केंद्रित होता है। यह मूर्तिपूजा का एक सूक्ष्म संकेत है।

2:17-24 की अलंकारिकता को देखें। वार्ताकार, पॉल का आपत्तिकर्ता, काल्पनिक आपत्तिकर्ता, श्लोक 17-20 में 11 अलग-अलग पवित्र यहूदी दावों के साथ आता है। इसे पाँच अलंकारिक प्रश्नों के साथ चुनौती दी गई है। यह अक्सर अदालती बयानबाजी में होता है, किसी भी तरह से अदालती बयानबाजी तक सीमित नहीं होता है, लेकिन आप व्यक्ति के उत्तर देने की तुलना में तेजी से विभिन्न प्रश्नों के साथ घर में घुसते रहते हैं।

यह बस उन्हें मुद्दे की ओर ले जाता है और उन्हें ऐसा दिखाता है कि वे अच्छे से उत्तर नहीं दे सकते। छंद 21-23 में, आपको ये पाँच अलंकारिक प्रश्न मिले हैं, इनमें से प्रत्येक प्रतिपक्षी की अलंकारिक युक्ति का उपयोग करते हुए, दो चीजों की तुलना करते हुए, और अनाफोरा का भी उपयोग करते हुए। अनाफोरा वह जगह है जहां आप समानांतर भाषा से शुरुआत और अंत करते हैं।

ठीक है, विशेष रूप से आप अनाफोरा से शुरू करते हैं, लेकिन यहां हमारे पास है, मुझे लगता है कि आप इसे एक तरीके से रख सकते हैं, आपके पास एक कथन में एक्स डॉट, डॉट, डॉट, वाई है। अगले कथन में, आपके पास x बिंदु, बिंदु, बिंदु, y है। आप यहां शुरुआत और अंत में वही बात दोहराते हैं। प्राधिकार से एक अलंकारिक अपील है।

और फिर वह अध्याय दो, श्लोक 23-24 में एक स्पष्ट प्रमाण पाठ के साथ अतिशयोक्तिपूर्ण पाखंडी को समाप्त करता है। इसलिए, वह बस इस काल्पनिक वार्ताकार को इस तरह से समतल कर देता है जिससे उसकी बात समझ में आ जाती है। कानून में जिस धार्मिकता का दावा यह व्यक्ति करता है वह वास्तव में केवल आत्मा के द्वारा ही उपलब्ध है।

अध्याय दो में श्लोक 17 में, आप यहूदी नाम का दावा करते हैं। खैर, 2.29 में सच्चे यहूदी, इब्राहीम 4:12 और 16:17 के बच्चे, और 11:17 में इज़राइल में रचे गए लोग। ईश्वर में घमंड 2:17-23, लेकिन ईश्वर में असली घमंड 5:11 में है, और आप 5:2-3 में इसके लिए तैयार हैं, हम इसके बारे में बाद में देखेंगे। परमेश्वर की इच्छा जानना और जो अच्छा है उसका अनुमोदन करना, 2:18 . खैर, यह केवल 12:2 में है कि हम वास्तव में परमेश्वर की इच्छा को जानते हैं और जो अच्छा है उसका अनुमोदन करते हैं।

अन्धकार में पड़े हुएों के लिये ज्योति, 2:19. खैर, हमें 13:12 में अंधकार के बजाय प्रकाश के लोग बनना है। यह 2.20 में कानून का शिक्षक होने का दावा करता है, लेकिन हम 6:17, 12:7, 15:4, और 16:17 में शिक्षण का सही उपयोग देखते हैं। कानून में ज्ञान और सत्य होना, 2:20, यही वह व्यक्ति दावा करता है, लेकिन वास्तव में सत्य का ज्ञान होना 15.8 और 14 में प्रकट होता है। यहां कुछ पाप, मंदिर डकैती, श्लोक 22, अक्सर अपवित्रता का प्रतीक थे अन्यजातियों। अन्यजातियों का मानना था कि यदि आपने ऐसा किया, तो आपको न्याय का सामना करना पड़ेगा, और उनके पास देवताओं द्वारा मंदिरों को अपवित्र करने और मंदिरों को लूटने वाले लोगों का न्याय करने के बारे में सभी प्रकार की कहानियाँ थीं।

कई अन्यजातियों को इस अपराध के लिए यहूदियों पर संदेह था क्योंकि यहूदी ही वे लोग थे जो बुतपरस्त मंदिरों को पवित्र नहीं मानते थे। अब, यहूदी धर्मशास्त्री इसे उचित रूप से अस्वीकार करते हैं। वे वास्तव में मंदिरों को लूटने नहीं गए थे।

लेकिन यहां हमारे पास एक अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिद्वंद्वी है जो कहता है, आप जानते हैं, मैं मूर्तियों के खिलाफ हूं, लेकिन वह मूर्तियों से परहेज नहीं करता है। वह किसी मूर्ति को लूटने और उसे पिघलाने या कुछ और करने के लिए मंदिर में जाएगा। भगवान के नाम को अपवित्र करना, श्लोक 23 और 24, अक्सर यहूदी लोगों के लिए अपवित्रता का प्रतीक था।

और वास्तव में रोम में एक पाखंडी यहूदी का घोटाला हुआ था जो परिचित था क्योंकि एक पीढ़ी पहले, एक यहूदी धोखेबाज़ था जिसने मूसा के कानून सिखाने का दावा किया था, और वह रोमन महिलाओं का शोषण कर रहा था, जो कि रोमन पुरुषों की ही बात थी विदेशी धर्मों के बारे में सबसे अधिक नापसंद, हमारी पत्नियों का धर्म परिवर्तन न करें। हमारा अपना घर है, रोमन घरेलू धर्म चूल्हे के आसपास है, हम अपनी पत्नियों का धर्म परिवर्तन नहीं कराते हैं। लेकिन वह रोमन महिलाओं का शोषण कर रहा था, कथित तौर पर यरूशलेम के लिए धन इकट्ठा कर रहा था, लेकिन वास्तव में वह अपने लिए धन इकट्ठा कर रहा था।

यह उजागर हो गया और ज़ेनोफ़ोबिक रोमन इतने परेशान हुए कि पूरे यहूदी समुदाय को निष्कासित कर दिया गया या गुलाम बना लिया गया। इसके बारे में हम जोसेफस के पुरावशेषों, 1881 से 84 में पढ़ते हैं। टिबेरियस ने एक पीढ़ी पहले यहूदी समुदाय को रोम से निष्कासित कर दिया था।

और इसलिए, पॉल जिस प्रकार के व्यक्ति का वर्णन कर रहा है वह वास्तव में ज्ञात था। विशिष्ट सामान्य यहूदी नहीं, बल्कि वास्तव में इस प्रकार के अतिशयोक्तिपूर्ण यहूदी होंगे, उनके मन में कोई ऐसा व्यक्ति रहा होगा जो इस तरह का था। पौलुस आगे कहता है, तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निन्दा होती है।

यह चर्च के अनुशासन का एक कारण है, क्योंकि यदि आपके पास ईसाई हैं जो दुनिया की तरह काम करते हैं, तो आपके पास बाहरी लोग होंगे जो ठीक उसी तरह प्रतिक्रिया करते हैं जैसे मैं ईसाई होने से पहले प्रतिक्रिया कर रहा था, कह रहा था, ठीक है, आप जानते हैं, ईसाई ऐसा नहीं करते हैं किसी भी तरह अलग ढंग से जियो. वे इस पर विश्वास नहीं करते. मैं इस पर विश्वास क्यों करूंगा? इसका एक कारण यह है कि मैंने नाममात्र ईसाइयों को वास्तविक ईसाइयों से अलग नहीं किया।

वहाँ वास्तविक ईसाई थे जो हर किसी की तरह नहीं जी रहे थे। परन्तु तेरे कारण अन्यजातियों में निन्दा हुई। और जिस तरह से वह धर्मग्रंथ का उपयोग करता है, यह एक अलंकारिक झटका है, ठीक वैसे ही जैसे वह अध्याय 3, श्लोक 10 से 18 तक करता है।

यशायाह 52:5 का संदर्भ, जिसे वह उद्धृत करता है, भगवान के नाम की निंदा उसके लोगों की पीड़ा के कारण की गई थी। परन्तु यहाँ, उनके पाप के कारण परमेश्वर के नाम की निंदा की जाती है। हालाँकि, शुरुआत में उन्हें उनके पाप के कारण निर्वासित किया गया था।

यहेजकेल 36:18 से 20, इत्यादि। पॉल शायद यशायाह 52:5 को अपने कई लोगों द्वारा यशायाह 52:7 में अच्छी खबर को अस्वीकार करने से जोड़ सकता है, जिसे वह बाद में रोमियों अध्याय 10 और श्लोक 15 में उद्धृत करता है। वह अभी भी संदर्भ को जानता है, उस पूरे संदर्भ को जानता है, केवल दो छंद बंद।

तो, श्लोक 25 से 29 तक, वह आंतरिक यहूदीपन की बात करता है। पॉल कहते हैं, यहूदीपन केवल उन लोगों के लिए मूल्यवान है जो वाचा का पालन करते हैं। यदि आप अनुबंध का पालन नहीं करते हैं, तो आप वास्तव में अधिक परेशानी में हैं क्योंकि आप बेहतर जानते थे।

वह कहते हैं, कुछ अन्यजाति लोग वाचा का बेहतर ढंग से पालन करते हैं। वे कानून की नैतिक मांगों का पालन करते हैं, हालांकि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि कानून में क्या शामिल है, लेकिन उदाहरण के लिए, वे फिर भी अपने पड़ोसी के प्रति अच्छे हैं। और कुछ यहूदी लोग अपने पड़ोसियों के प्रति अच्छे नहीं हैं।

यह वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है जिससे हममें से कोई भी इनकार करेगा क्योंकि, ठीक है, ऐसा ही उन लोगों के लिए भी किया जा सकता है जो ईसाई होने का दावा करते हैं। आराधनालय से जुड़े खतनारहित ईश्वर-भयभीत लोग अक्सर कुछ यहूदी मूल्यों, कानून में मौजूद मूल्यों की तरह, का पालन करते थे। सिद्धांत रूप में, कोई भी अन्यजाति ऐसा कर सकता है।

व्यवहार में, ये वे लोग हैं जो मसीह में हैं, जिनके पास आत्मा है, जहां आत्मा हममें फल पैदा करता है। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसके बारे में हम घमंड कर सकें, बल्कि यह ऐसी चीज़ है जिसका श्रेय ईश्वर को जाता है क्योंकि वह इसे हममें कर रहा है। आप श्लोक 29 में अध्याय दो को देखें, जहां वह इसे इस तरह से वर्णित करता है और उसी प्रकार की कल्पना आपके पास अध्याय सात, श्लोक पांच और छह, और अध्याय आठ और श्लोक नौ में है।

वह आध्यात्मिक खतना की बात करता है। वह उन लोगों के बारे में बात करता है जो हृदय से खतनारहित हैं, पद 25। हमारे पास पुराने नियम में, लैव्यव्यवस्था 26:41, यिर्मयाह 4:4, यिर्मयाह 9:25 और 26 में, उन लोगों के बारे में है जो हृदय से खतनारहित हैं।

खैर, पॉल यह भी तर्क देता है कि धर्मान्तरित लोगों, धर्मान्तरित लोगों, जो परमेश्वर के कानून का पालन करते हैं, उनके दिल का खतना किया जाता है, 2:26। खतना अन्यजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा थी। कई रोमन अन्यजातियों ने इस प्रथा के लिए यहूदियों की आलोचना की।

यह परमेश्वर के लोगों में शामिल होने की इच्छा रखने वाले गैर-यहूदी लोगों के लिए एक प्राथमिक बाधा थी क्योंकि यह एक वयस्क के लिए काफी दर्दनाक था, शायद एक बच्चे के लिए भी काफी दर्दनाक था, लेकिन बच्चे बड़े होने पर इसे याद नहीं रखते क्योंकि यह आम तौर पर आठवें दिन होता है। लेकिन पॉल के लिए, अन्यजातियों के विश्वासियों को आध्यात्मिक रूप से भगवान के

लोगों की विरासत में शामिल किया गया है, अध्याय चार, श्लोक 16, अध्याय 11 और श्लोक 17। खतना पर जोर बाइबिल के कुछ ग्रंथों में दिखाई देता है, लेकिन यह काफी महत्वपूर्ण है कि यह कहां होता है के जैसा लगना।

उत्पत्ति 17, वाचा का चिन्ह। आपके घर में किसी का भी खतना किया जाना है। निर्गमन 4:26 जो कोई तेरे बीच में रहता है, यदि मूसा अपने पुत्रों का खतना न होने दे, तो वह बड़े संकट में है।

लैव्यव्यवस्था 12:3, बच्चों के बारे में बात करते हुए, यहोशू 5:2-8, ठीक है, उन्होंने जंगल में ऐसा नहीं किया। अब वे भूमि में आते हैं। वे खतना के साथ वाचा को नवीनीकृत करते हैं।

यह एक प्रतीकात्मक पहचान है। इसका मतलब यह नहीं है कि यह ऑन्टोलॉजिकल रूप से प्रभावकारी है, जैसे खतना का अपने आप में कुछ प्रकार का आध्यात्मिक प्रभाव होता है, लेकिन यह भगवान के लोगों के साथ पहचान करने का एक तरीका है। यह जंगल के दौरान नहीं किया गया था।

परमेश्वर द्वारा कराए जाने से पहले मूसा के बच्चे नहीं हुए थे, और उसके बेटों का खतना नहीं हुआ था। लेकिन इज़राइल के साथ पहचान के रूप में यह अनिवार्य था। विशेष रूप से हाल की शताब्दियों में, राष्ट्रीय पहचान की विशिष्टता के रूप में इस पर जोर दिया गया, आंशिक रूप से क्योंकि यहूदी लोगों को इसके लिए बहुत सताया गया था।

हमने पहले विभिन्न प्रकार के सीमा चिन्हों के लिए सताए जाने के बारे में बात की थी, जिसके कारण लोगों के बीच उनका बहुत महत्व था। एंटिओकस IV एपिफेन्स ने कहा कि यदि माताएं अपने बच्चों का खतना करती हैं और उन्हें पता चलता है कि बच्चों को मार दिया गया है, तो उन्हें मां के गले में लटका दिया जाता था और उन दोनों को यरूशलेम की दीवारों से फेंक दिया जाता था। बहुत ही भयानक व्यवहार क्योंकि उन्होंने भगवान की वाचा को निभाने पर जोर दिया।

ठीक है, यदि यह आपके वंश का हिस्सा है, तो निश्चित रूप से आप इसे जारी रखना अपने लोगों के प्रति वफादारी का प्रतीक मानेंगे। ऐसे लोग थे जो दौड़ में ग्रीक शैली में नग्न होकर दौड़ना चाहते थे और नहीं चाहते थे कि कोई उनके खतना के लिए उनका मजाक उड़ाए। अतः वे खतनारहित हो गये।

उनकी चमड़ी को आगे खींचने के लिए ऑपरेशन किया गया। वह मैकाबीयन युग के दौरान था। इसलिए, यह दिखाने का एक निशान कि आप वाचा के प्रति वफादार थे, अपना खतना बनाए रखना था, खतनारहित नहीं होना।

हालाँकि, पुराना नियम आध्यात्मिक खतना की भी बात करता है। व्यवस्थाविवरण 10:16, व्यवस्थाविवरण 30.6, लैव्यव्यवस्था 26:41, और अन्य जिनका हमने उल्लेख किया है, यहजेकेल 44:7 और 9 जैसा कुछ। पॉल के लिए, आध्यात्मिक खतना अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि बाहरी प्रतीक का वास्तविक अर्थ यही है बस एक संकेत। यह वाचा का एक बाहरी चिह्न है, लेकिन यह आंतरिक चिह्न है जो अधिक मायने रखता है।

उसने लोगों को अनावश्यक रूप से खतना या खतनारहित कराने की आवश्यकता बताकर उन्हें अनुबंध से अलग करने की आवश्यकता नहीं समझी। वह इसके खिलाफ़ चेतावनी भी देते हैं। 1 कुरिन्थियों 7:18 और 19, गलातियों 5:6, गलातियों 6:15। वह यह सोचता है कि भीतर ही काफी है, इसका कारण यह है कि यहां श्लोक 29 में वह आत्मा के वादा किए गए उपहार के बारे में बात करता है।

जैसा कि अधिनियमों की पुस्तक में है, जिसने ईश्वर के समक्ष अन्यजातियों की स्वीकृति की पुष्टि की। यदि परमेश्वर ने उन्हें स्वीकार कर लिया है, और यदि उन्हें आत्मा का वादा प्राप्त हुआ है, जो युगांतशास्त्रीय रूप से इन पुराने नियम के ग्रंथों में जुड़ा हुआ था जो इज़राइल की बहाली के बारे में बात करते हैं, तो आत्मा का उंडेला जाना परमेश्वर के लोगों के लिए होगा। इसलिए, यदि ईश्वर ने उन्हें लोगों के रूप में स्वीकार किया है, यदि ईश्वर उन्हें आध्यात्मिक रूप से खतना के रूप में मानते हैं, यदि ईश्वर उन्हें आंतरिक रूप से अपनी वाचा का हिस्सा मानते हैं, आंतरिक रूप से अब्राहम के वंशज के रूप में मानते हैं, अब्राहम के मॉडल का अनुसरण करते हुए मानते हैं, तो बाहरी अंकन उन लोगों के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण हो जाता है। जो जातीय रूप से यहूदी नहीं हैं।

वह सच्चे यहूदी की बात करता है जो ईश्वर से अपनी प्रशंसा चाहता है। श्लोक 29, 2, 7, और 10 के धर्मी लोगों की तरह। यहां एक शब्द-क्रीड़ा हो सकती है जिसे शायद हर कोई नहीं पकड़ पाएगा।

ऐसा लगता है कि पॉल कभी-कभी ऐसा करता है। 2 कुरिन्थियों 4 में, वह महिमा के इस महान भार की बात करता है। खैर, हिब्रू में, काबोड का अर्थ वह हो सकता है जिसे हम महिमा के रूप में अनुवादित करते हैं, या इसका मतलब वजन या भारीपन हो सकता है।

तो यहाँ भी, अच्छा, यहूदा नाम का क्या अर्थ है? खैर, उत्पत्ति 29 और 49 के सेप्टुआजेंट में इसका अलग-अलग अनुवाद किया गया है, लेकिन यहूदा का अर्थ प्रशंसा है। और इसलिए, असली यहूदी, वह कहता है, असली यहूदी वह है जो ईश्वर से अपनी प्रशंसा चाहता है। श्लोक 29.

और फिर वह आत्मा और अक्षर के बारे में भी बात करने जा रहा है, एक विरोधाभास। और वह अध्याय सात और श्लोक छह में उस पर लौटेगा। और यहीं पर मैं इससे निपटने का इरादा रखता हूँ क्योंकि हमारे पास अधिक संदर्भ हैं जो हमें यह पता लगाने में मदद कर सकते हैं कि उसका वहाँ क्या मतलब है।

लेकिन अब अध्याय तीन की ओर बढ़ते हुए, जहाँ वह इस विचार को जारी रखता है, अच्छा, सच्चा यहूदी कौन है? जो अंदर से यहूदी है। और इसलिए यह सवाल उठता है, तो फिर जातीय यहूदीपन का क्या मतलब है? क्या इसका कोई मूल्य है? वह कहने जा रहा है, अरे हाँ। वह जातीय भेदभाव या उस जैसी चीज़ों को कमतर नहीं आंक रहा है।

रोमियों अध्याय तीन, श्लोक एक से आठ तक परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को संबोधित करता है। परमेश्वर वह नहीं है जिसने वाचा तोड़ी। तो यहाँ पॉल थियोडिसी जैसा कुछ कर रहा है, यह दर्शाता है कि ईश्वर वफादार है।

एक काल्पनिक वार्ताकार के अलंकारिक प्रश्न और आपत्तियों से पता चलता है कि वह इस बिंदु पर अभी भी डायट्रीब फॉर्म का उपयोग कर रहा है। 2:25 से 29 में उसने जो तर्क दिया है उस पर स्पष्ट आपत्ति है। जातीय यहूदीपन का मूल्य क्या है? और वह आपत्ति, वह प्रश्न अध्याय तीन के श्लोक एक में उठाया गया है।

किसी चीज़ के मूल्य या किसी चीज़ के लाभ के बारे में प्रश्न। इस प्रकार के प्रश्न प्राचीन अलंकार और नीतिशास्त्र, अलंकारिक पुस्तिकाओं और दार्शनिक कार्यों में नियमित रूप से उपयोग किए जाते थे। वे इस बारे में बात करते हैं, खैर, यहां वे तरीके हैं जिनसे आप चीजों का मूल्यांकन करते हैं।

और उनमें से एक यह है कि कोई चीज़ किस प्रकार मूल्यवान या लाभदायक है। खैर, जातीय यहूदीपन से क्या लाभ हुआ? पॉल की प्रतिक्रिया बड़ा अवसर है। मुक्ति इतिहास में उनकी विशेष भूमिका थी अथवा उनकी विशेष भूमिका थी।

अध्याय 9, श्लोक 4 और 5, अध्याय 11, श्लोक 12 और 15, भविष्य की ओर भी देखते हुए। साथ ही, स्पष्ट रहस्योद्घाटन, धर्मग्रंथ तक उनकी अधिक पहुंच थी। पॉल का कहना है कि उन्हें भगवान के दैवज्ञ, अध्याय तीन पद दो में सौंपा गया था।

इसलिए, गैर-यहूदियों की तुलना में उन्हें एक बड़ा फायदा यह था कि उन्हें ईश्वर के रहस्योद्घाटन तक अधिक पहुंच प्राप्त थी। लेकिन वह कहते हैं, सबसे पहले, अध्याय तीन के श्लोक दो में, वह कभी भी दूसरे या तीसरे के साथ वापस नहीं आते हैं। अब, मान लिया गया है, हममें से कई प्रोफेसर वास्तव में अनुपस्थित-दिमाग वाले हैं, लेकिन हो सकता है कि पॉल इसे बाद में लेने की योजना बना रहा हो।

वह अध्याय नौ, छंद चार और पांच में यहूदी धर्म के लाभों को उठाता है। हालाँकि अध्याय एक के श्लोक आठ में, वह भी पहले जैसी भाषा का उपयोग करता है और हमेशा इसे दोबारा नहीं उठाता है। दूसरी आपत्ति जिसका उसे जवाब देना चाहिए, वार्ताकार, श्लोक तीन, इज़राइल की आस्था की कमी को ईश्वर की विश्वसनीयता को नकारना नहीं चाहिए।

कुछ यहूदी शिक्षकों ने तर्क दिया कि इज़राइल ने चाहे कैसा भी व्यवहार किया हो, भगवान ने हमेशा उन्हें अपने बच्चों के रूप में गिना। आप वास्तव में पुराने नियम के पाठों से दोनों तरीकों से बहस कर सकते हैं। वैसे भी, अध्याय तीन के श्लोक चार में पॉल कहता है कि परमेश्वर की वाचा की निष्ठा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता।

उसकी वाचा की निष्ठा उसकी धार्मिकता के बराबर है, लेकिन परमेश्वर की धार्मिकता का अर्थ है कि परमेश्वर इस्राएल का न्यायाधीश भी है। इसलिए अवज्ञाकारी इस्राएल को दंडित किया जाएगा और भगवान उन्हें दंडित करने में धर्मी साबित होंगे। मैं एक उदाहरण देने जा रहा था, लेकिन मुझे लगता है कि इससे मैं बहुत अधिक विवाद खड़ा कर दूंगा।

तो मैं बस यह कहना चाहता हूँ कि पुराने नियम में, परमेश्वर कभी भी अपने लोगों को पूरी तरह से नहीं त्यागता। भगवान के पास हमेशा अपने लोगों के लिए एक योजना होती है। परन्तु जब इस्राएल ने गलत काम किए, तो परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया।

और इसलिए, आप बस यह नहीं कह सकते, ठीक है, यह इज़राइल है। ये भगवान के लोग हैं। आपको हमेशा इज़राइल से सहमत होना होगा।

पुराने नियम में यह सत्य नहीं था। ईश्वर न्यायसंगत है। ईश्वर को धर्मी दिखाया जाता है और मानवता के विरोध की निंदा की जाती है।

पौलुस अध्याय तीन के श्लोक चार में कहता है कि हर कोई झूठा है। वह भाषा सेप्टुआजेंट में भजन 116 श्लोक 11 या 115 से है। यह रोमियों अध्याय तीन, श्लोक 10 से 18, विशेष रूप से 3.13 में पापहीनता के पाठ की आशा करता है। और यह संभवतः परिचित था, विशेषकर यहूदी लोगों या उन लोगों के लिए जो यहूदी त्योहार मनाते थे।

पॉल के मुख्य आदर्श श्रोता उसके अर्थ को अधिक समझ सकते हैं। हर कोई उस चीज़ को नहीं पकड़ पाता जो मुख्य आदर्श दर्शक पकड़ता है, लेकिन पॉल निश्चित रूप से यह जानता होगा। यह हालेल से है।

उन्होंने अन्यत्र भजन 116 से उद्धरण दिया है, लेकिन यह हालेल है। भजन 113 से भजन 118 तक फसह के मौसम के दौरान नियमित रूप से गाया जाता था। अधिक स्पष्ट रूप से, वह भजन 51.4 का हवाला देता है जहां भजनकार भजनकार के अपराध और भगवान की धार्मिकता को स्वीकार करता है।

मैं दोषी हूँ। ईश्वर यह पहचानने में धर्मी है कि मैं दोषी हूँ। लेकिन भजन 51 को दाऊद के पश्चाताप पर भी लागू किया गया था।

उस भजन के लिए हमारे पास यही उपशीर्षक है। और वह उपरिलेख पॉल के समय में अस्तित्व में था। यह रोमियों अध्याय चार, छंद छह से आठ में कार्यों के बिना डेविड की ईश्वर की क्षमा की आशा करता है, जिसे हम बाद में देखेंगे।

अगली आपत्ति, इस्राएल का पाप परमेश्वर की महिमा करता है। अध्याय तीन, श्लोक पाँच और सात। यह वार्ताकार अब हताश हो रहा है और पॉल वास्तव में उसे रिडक्टियो एड एक्सर्डम में कम कर रहा है, उसे बेतुके में कम कर रहा है।

खैर, श्लोक छह में, ईश्वर दुनिया का न्याय करने के लिए धर्मी है। इसलिए, परमेश्वर भी धर्मी है जब वह अपने अवज्ञाकारी लोगों का न्याय करता है। श्लोक आठ में वार्ताकार के तर्क का प्रभाव यह है कि चलो पाप करें क्योंकि यह कुछ अच्छा करता है।

इससे कुछ अच्छा निकलता है. ऐसा करने से, हमारे अधर्म से निपटने से परमेश्वर की महिमा होती है। कुछ लोगों ने वास्तव में आस्था द्वारा धर्मी ठहराए जाने की पॉल की अपनी शिक्षा को तोड़-मरोड़कर पेश किया था, जो पाप की अनुमति देता है।

कुछ लोग आज भी विश्वास द्वारा औचित्य की पॉल की शिक्षा के साथ ऐसा करते हैं। लेकिन पॉल के लिए, धर्मी, धर्मी, याद रखें कि यह एक ही क्रिया है, धर्मी व्यक्ति धार्मिकता से जी सकता है। रोमियों 6, आप गलातियों 2:17 से 21, गलातियों 5:5 और 6, गलातियों 5:24 से तुलना कर सकते हैं। तो, पॉल यह तर्क देने जा रहा है कि सभी पाप के अधीन हैं।

अध्याय 3, श्लोक 9 से 20 तक। ईश्वर अपनी वाचा के प्रति वफादार है। अध्याय 3, श्लोक 1 से 8 तक।

लेकिन इज़राइल तीन, नौ से 20 तक वफादार नहीं रहा है। और निश्चित रूप से, यहूदी लोग, जब वे अपने अतीत को देखते हैं, नहेमायाह को दोहराते हुए, डैनियल और एज्रा को दोहराते हुए, उन्होंने पहचाना कि इज़राइल ने अक्सर भगवान की अवज्ञा की थी। खैर, पॉल विभिन्न पाठों को एक साथ जोड़ने जा रहा है और एक सामान्य कीवर्ड या वाक्यांश या अवधारणा या संदर्भ का उपयोग करके ग्रंथों को एक साथ जोड़ना, शब्दों को एक साथ जोड़ना आम बात थी।

यहूदिया में, इस प्रथा को गीज़र हाशवा कहा जाता है, जो एक सामान्य कीवर्ड के आधार पर ग्रंथों को एक साथ जोड़ना है। लेकिन पॉल ने इसे अपने अधिकांश समकालीनों की तुलना में अधिक विस्तार से किया है, यहां कई ग्रंथों को एक साथ जोड़ा है। वह मृत्यु, तीन, 13, ए, और सी, और 15 से 17 तक के ग्रंथों को एक साथ जोड़ता है।

यह 5:12, 14, 17, और 21 में भी एक विषय है। 6:16, 21, 23, 7:5, 10, 13, 24, 8:6। वह मृत्यु के बारे में बहुत कुछ बात करने जा रहा है, लेकिन वह पहले से ही इन छंदों में उस विषय पर काम कर रहा है जिसे उसने छंद 13, 15, 16 और 17 में उद्धृत किया है। अधिकांश ग्रंथों में वह शरीर के अंगों का उल्लेख करता है।

हाशावा के लिए कनेक्शन है। श्लोक 18 में आँखें, श्लोक 15 से 17 में पैर, और सबसे व्यापक रूप से, और आश्चर्य की बात नहीं जब हम पाप के बारे में बात कर रहे हैं, श्लोक 13 और 14 में मुँह। शरीर के अंगों के बारे में बात करने का उनका उपयोग पुस्तक में बाद में तैयार हो सकता है जहां वह पाप की शक्ति के तहत हमारे शरीर के अंगों के बारे में बात कर रहा है और मांस के बारे में बात कर रहा है, 6:6, 7:5, 7:24, और 25, 8:10, 8:13। आप इसे कुलुस्सियों 3:5 इत्यादि में भी देख सकते हैं।

पॉल हमें 3:10 से 18 तक अपने सिद्धांत के लिए अपना बाइबिल समर्थन देता है। सबसे पहले, वह भजन 14, 1 से 3, 1 और 3 में दो समान पंक्तियों का हवाला देता है। इसलिए पॉल पहले वाले को बदल देता है, क्योंकि वे दोनों दयालुता कहते हैं। पॉल पहली दयालुता को धर्मी में बदल देता है, जो रोमियों 1:17 और इसके आगे के बड़े संदर्भ में धार्मिकता के बारे में बात करते हुए उसके द्वारा कही गई बात पर फिट बैठता है।

खैर, अगर कोई दयालु नहीं है, तो जाहिर तौर पर कोई धर्मी भी नहीं है। वह भजन 5:9, भजन 140:3, भजन 10:7, यशायाह 59:7 और 8, और अंत में भजन 36:1 से भी उद्धरण देता है। अब इनमें से अधिकांश स्पष्टतः भजनों से हैं। एकमात्र अपवाद, यशायाह 59:7 और 8, यही एकमात्र अपवाद है जो संपूर्ण इज़राइल पर लागू होता है।

संदर्भ में भजन भजनकार के शत्रुओं पर लागू होते हैं, लेकिन पॉल इन ग्रंथों के बीच या इन ग्रंथों के बीच एक मध्यराशी लिंक बनाने में सक्षम है जिसे उसके यहूदी समकालीनों द्वारा समझा गया होगा। इसलिए, उन्होंने उसी विधि का उपयोग किया, हालांकि आमतौर पर इतनी लंबी अवधि में नहीं। उनका कहना है कि पवित्रशास्त्र इन मामलों की घोषणा उन लोगों के लिए करता है जो कानून के अधीन हैं।

वे ही थे जिन्होंने कानून सुना, अध्याय 3, श्लोक 19। इसलिए वे ही थे जिनके पास सबसे बड़ा ज्ञान और जिम्मेदारी थी, वह कहते हैं। 3:19 में निंदा. खैर, उनका कहना है कि कानून उन लोगों की निंदा करता है जो इसके अधीन हैं।

खैर, क्या कानून वास्तव में बोलता है? लेकिन यहां वह प्रोसोपोपिया या मानवीकरण जैसी किसी चीज़ का उपयोग कर रहा है, जहां कानून एक व्यक्ति के रूप में कार्य करता है और कानून ये बातें कहता है। यहां कानून का मतलब सिर्फ मूसा की किताबों से नहीं है, बल्कि पवित्रशास्त्र उन लोगों से ये बातें कहता है जो इसके अधीन हैं। तो यह शास्त्र बोल रहा है।

इस प्रकार, वह कहता है, हर मुँह, वह पहले से ही मुँह, पापी मुँह के बारे में बात कर चुका है, लेकिन कविता 19 में यहूदी सहित हर मुँह को फैसले पर चुप करा दिया जाएगा। तो अध्याय 3, श्लोक 5 से 8 तक आपत्तिकर्ता के पास फैसले के दिन बहस करने के लिए कुछ भी नहीं होगा। परमेश्वर के सामने हर कोई चुप हो जाएगा।

वह कहते हैं, कानून लोगों की पापपूर्णता को फिर से प्रकट करता है, जैसा कि अध्याय 3, श्लोक 10 से 18 में उदाहरण दिया गया है। और अब वह भजन 143, श्लोक 2 का संकेत देता है, जहां भजनकार ईश्वर की दया की याचना करता है क्योंकि कोई भी जीवित नहीं है, यहां पॉल कहते हैं, परमेश्वर की दृष्टि में कोई भी प्राणी धर्मी नहीं गिना जाएगा। तो, भगवान का मानक इतना सही है, भजनकार कहता है कि मुझे आपकी दया की आवश्यकता है क्योंकि कोई अन्य तरीका नहीं है जिससे मैं धर्मी माना जा सकूं।

कानून के कार्य, श्लोक 20, कुछ ने इसे विशेष रूप से यहूदी पहचान चिह्नक के रूप में लिया है, जैसे कि खतना। हम इन पहचान चिह्नों को अध्याय 4 और 14 में देखते हैं। दूसरों का तर्क है कि इसका मतलब सभी कानून है।

और मुझे लगता है कि कुल मिलाकर उनके पास बेहतर तर्क है। यदि आप पूछ रहे हैं कि क्या मैं नया परिप्रेक्ष्य हूं या पुराना परिप्रेक्ष्य, अब तक, यदि आप उन श्रेणियों से अवगत हैं, तो आप जानते हैं कि मैं प्रत्येक तर्क से सर्वश्रेष्ठ लेने की कोशिश कर रहा हूं, प्रत्येक तर्क को ध्यान में रखते हुए। प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ भी कहता है उसे एक विशेष स्थिति से लेने के बजाय एक समय में। लेकिन अन्य लोग कहते हैं कि यह सब कानून है।

मुझे लगता है कि उनके पास बेहतर तर्क है। कानून करने के बारे में बाइबिल ग्रंथों में, हिब्रू में, काम करना के संज्ञा रूप की तरह है। और इसलिए, आपके पास कानून करने के बारे में पाठ हैं।

कानून के कार्यों में कानून में कुछ भी शामिल है। इसमें संपूर्ण कानून शामिल है। हालाँकि, यह कहते हुए कि यहूदी विशिष्टताएँ मामले को विशेष रूप से अच्छी तरह से प्रस्तुत करती हैं।

और पॉल उन यहूदी विशिष्टताओं, जैसे खतना, भोजन कानून और पवित्र दिनों के लिए अपील करने जा रहा है। ऐसी विशिष्टताएँ थीं जिन्हें अपनाने के लिए गैर-यहूदी धर्मान्तरित लोगों को सबसे अधिक मेहनत करनी पड़ सकती थी। खतना वास्तव में एक बहुत बड़ा मुद्दा है, पॉल को अतीत में ऐसे कुछ लोगों से निपटना पड़ा है।

आप देखते हैं कि गलातियों 2:3 से 12, गलातियों 5:2 से 11, और गलातियों 6:12 से 15। गलातिया में खतना एक बड़ा मुद्दा है। हर किसी के लिए पॉल का समाधान।

उन्होंने समस्या के बारे में विस्तार से बताया है। मुझे याद है एक साल पहले, मैंने कहा था, चलो, हम तय कर रहे थे कि बाइबल अध्ययन किस विषय पर करना है। और हर हफ्ते हम किसी किताब का एक अध्याय लेने जा रहे थे।

और मैंने कहा, चलो इसे रोमन में करते हैं। और सभी ने कहा कि यह बहुत अच्छा विचार है। खैर, पहले कुछ हफ्ते काफ़ी खराब थे क्योंकि हमने पूरा समय मानवीय भ्रष्टाचार के बारे में बात करने में बिताया।

लेकिन आखिरकार, हम और अधिक सुखद चीज़ों तक पहुँच गए क्योंकि दुष्टता केवल इस बात के लिए आधार तैयार करना है कि क्यों हम सभी को ईश्वर की एक ही तरह से आवश्यकता है, यहूदी और गैर-यहूदी दोनों, दोनों लोग जो आज धार्मिक हैं और जो लोग धार्मिक नहीं हैं, दोनों लोग जो धार्मिक हैं ईसाई पृष्ठभूमि से हैं और जो लोग नहीं हैं। भगवान सभी को मुक्ति प्रदान करते हैं। धर्म के संदर्भ में, मैंने भी कभी-कभी उपदेश देते समय इसे इस तरह रखा है।

ध्यान रखें कि जो लोग ये वीडियो बनाते हैं वे मेरी हर बात के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं, लेकिन यहूदी धर्म हमें नहीं बचा सकता। बौद्ध धर्म हमें नहीं बचा सकता। इस्लाम हमें नहीं बचा सकता।

और ईसाइयत हमें बचा नहीं सकती। केवल यीशु मसीह ही हमें बचा सकते हैं। सभी के लिए भगवान का समाधान, 3:21 से 31.

जबकि वह पहले से ही 3.9 से 20 में तर्क दे चुका है, कि मानवता ने पाप किया और न्याय के योग्य है, लेकिन ईश्वर धर्मी बना हुआ है और एक रास्ता बनाता है कि वह यीशु पर भरोसा करने वाले व्यक्ति के लिए न्यायी और न्यायी दोनों हो सकता है। 3:21 से 31, 3:1 से 8 में एक समान विचार। कानून ने पाप को प्रकट किया, वह 3.20 में कहता है, लेकिन कानून ने हमें धर्मी नहीं बनाया। इसका मतलब ये नहीं कि कानून खराब है।

उन्होंने 7:7 और 14 में उस बिंदु पर जोर दिया। कानून का उद्देश्य ऐसा नहीं था। कानून का उद्देश्य हमें सही और गलत की जानकारी देना था।

इसका उद्देश्य हमें बदलना नहीं था। कोई भी नागरिक कानून आपका हृदय परिवर्तन करने के लिए नहीं है। नागरिक कानून पाप को सीमित करने के लिए है।

और, आप जानते हैं, कानून ने ऐसा किया, लेकिन इसका कभी भी आत्म-औचित्य के साधन के रूप में उपयोग करने का इरादा नहीं था। उसके लिए हमें ईश्वर के साथ एक रिश्ता चाहिए। हमें ईश्वर की कृपा पर निर्भर रहना होगा।

वह पद 21 में कहते हैं, कानून और भविष्यवक्ता धर्मी बनने का मार्ग सिखाते हैं। इसलिए, वे हमें सूचित करते हैं और वे हमें सूचित करते हैं कि धर्मी कैसे बनें। वे हमें इस ओर इशारा करते हैं, किसी की उपलब्धि का घमंड करके नहीं, बल्कि विश्वास के ज़रिए, यानी ईश्वर पर भरोसा करके।

3.27 और 31. और मुक्ति के इतिहास के इस चरण में, क्योंकि भगवान ने रखा, आप जानते हैं, जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ता रहा, भगवान लोगों को जिस पर विश्वास करने के लिए आमंत्रित कर रहे थे, उसमें और भी बहुत कुछ था। मेरा मतलब है, इब्राहीम के दिनों में, परमेश्वर ने इब्राहीम से बात की, उसने इस पर विश्वास किया।

परन्तु मूसा के दिनों में, तुम यह नहीं कह सकते थे, कि मूसा, मुझे तुम्हारी बात सुनने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मैं उस वादे पर विश्वास करता हूँ जो परमेश्वर ने इब्राहीम से किया था। मेरा मानना है कि उसे इसहाक नाम का एक बच्चा होने वाला था। ओह, सचमुच उसने ऐसा किया।

वह हमारे पूर्वज हैं। मुझे तुम्हारी बात सुनने की ज़रूरत नहीं है, मूसा। मूसा के दिनों में ऐसा करने से आप परमेश्वर के साथ गंभीर संकट में पड़ सकते थे।

उसी तरह, मुक्ति के इतिहास के इस चरण में, विश्वास यीशु में होना चाहिए क्योंकि भगवान ने यीशु के रहस्योद्घाटन के साथ यीशु मसीह में मुक्ति के अपने कार्य को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया है। 3.21 से 31 में विश्वास के माध्यम से भगवान की धार्मिकता। पहले से ही उस विषय को अध्याय 1 और श्लोक 17 में पेश किया गया था, लेकिन हमारे पास यहां इसका एक समूह है।

3.22, 25, और 26 में, वह इस बारे में बात कर रहा है। खैर, प्राचीन अलंकार ने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए दोहराव का उपयोग किया। और वास्तव में आपको यह जानने के लिए अलंकार में प्रशिक्षित होने की आवश्यकता नहीं होगी।

मेरा मतलब है, आपने इसे काफी सुना होगा। आप तो बस यही करना जानते थे. लेकिन दोहराव एक बिंदु तक घर ले जाएगा।

आपके पास सजातीय क्रिया dikaio के साथ-साथ dikaiosune , धार्मिकता भी है। आपके पास सजातीय क्रिया है उचित ठहराना या सही करना। यह 3:24, 3:26, 3:28, और 3:30 पर भी बार-बार प्रकट होता है। इसलिए, इस परिच्छेद में इस पर स्पष्ट रूप से जोर दिया गया है।

3.20 में कानून के कार्यों द्वारा प्रदान किए गए औचित्य की कमी का विकल्प कुछ ऐसा है जिसकी ओर कानून स्वयं हमें इंगित करता है, ईश्वर में विश्वास। और इसलिए श्लोक 22 में, हम यीशु मसीह के विश्वास के बारे में पढ़ते हैं, और 3:26 में भी। जबकि हमें इस ग्रीक वाक्यांश को कैसे समझना चाहिए, इस पर दो विचार हैं, व्यक्तिपरक संबंधकारक, मसीह का विश्वास या मसीह की वफ़ादारी, या एक वस्तुनिष्ठ संबंधकारक, जिसका अर्थ है मसीह में विश्वास, मसीह संबंधकारक का उद्देश्य है। आनुवंशिक, तकनीकी और व्याकरणिक रूप से, किसी भी दिशा में जा सकते हैं।

खैर, व्यक्तिपरक संबंधकारक के पक्ष में, हमारे पास इस संदर्भ में मसीह के कार्य की केंद्रीयता है। इसके अलावा, आपके पास अध्याय 3 और श्लोक 3 में एक समानांतर अभिव्यक्ति है, जो मुझे लगता है कि अध्याय में पहले भगवान की वफ़ादारी के लिए सबसे मजबूत तर्कों में से एक है। उस स्थिति में, ईश्वर पर विश्वास का अर्थ ईश्वर की निष्ठा है।

आपके पास भी एक समानता है, और यह इसके लिए एक और काफी मजबूत तर्क है, 3:26 में यीशु के विश्वास और 4:16 में इब्राहीम के विश्वास के बीच एक समानता। यह कई विद्वानों द्वारा तर्क दिया गया है। इस पर कार्ल बार्थ और रिचर्ड हेस, मोरा हुकर और काफी संख्या में विद्वानों, एनटी राइट द्वारा तर्क दिया गया था। यह वास्तव में एक तरह से अग्रणी स्थिति है, और इसलिए मैं वास्तव में इसे धारण करना चाहता था।

लेकिन दुर्भाग्य से, यह मुझे ऐसा लगा जैसे साक्ष्य एक अलग तरीके से इंगित करते हैं, लेकिन आपको पता होना चाहिए कि छात्रवृत्ति इसमें विभाजित है। वस्तुनिष्ठ संबंधकारक के पक्ष में, जहां मैं अंततः उतरता हूं, जब तक कि कोई बहुत जल्द मेरा मन नहीं बदल देता, मसीह में विश्वास। संज्ञा 3:22 में क्रिया के साथ जुड़ी हुई है, जहां यह एक आस्तिक के विश्वास को संदर्भित करती है।

गलातियों 2:16 में भी यह सत्य है। रोमन में सजातीय क्रिया 42 बार आती है। इन समयों में, यीशु विश्वास का विषय या उदाहरण नहीं बल्कि वस्तु है। यह यीशु पर विश्वास नहीं है।

यह यीशु में विश्वास है। इसलिए, यदि यह यीशु में विश्वास है, तो संभावना है कि विश्वास यीशु में है। मुझे लगता है कि रोमनों के संदर्भ में यही सबसे अधिक सार्थक है।

यीशु पर विश्वास करने के लिए रोमियों 4 में निम्नलिखित संदर्भ में क्रिया का छह बार उपयोग किया गया है। खैर, संबंधकारक निर्माण का उपयोग क्यों करें, या इसे अंग्रेजी में कहें तो यह विश्वास क्यों है और फिर कुछ ऐसा जो व्याकरणिक रूप से इतना अस्पष्ट है कि यह या तो विश्वास या विश्वास हो सकता है? उस निर्माण का उपयोग क्यों करें? संभवतः उस निर्माण के कारण जिसके साथ वह इसकी तुलना कर रहा है, अर्थात् कानून के कार्य। वह वहां जेनिटिव का उपयोग करता है, इसलिए वह यहां जेनिटिव का उपयोग करता है।

यह चर्च के पिताओं के बीच बहुमत का दृष्टिकोण था, जिनमें ओरिजन और ऑगस्टीन, एबेलार्ड, थॉमस एक्विनास, मार्टिन लूथर, आज के कई विद्वान, ब्रेंडन बर्न, जिन्होंने रोमनों पर एक बहुत अच्छी टिप्पणी भी लिखी थी, मैंने पहले उल्लेख किया था, जिमी डन, फिट्ज़मेयर शामिल थे।, मू, श्राइनर, टोबिन, और अन्य, इस मुद्दे के दोनों पक्षों पर कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों विद्वान।

इसलिए, मैं इस पर अधिक पारंपरिक दृष्टिकोण रखता हूँ। किसी भी तरह से, आपके पास विश्वास और कानून के बीच एक अंतर है, श्लोक 22 में विश्वास, श्लोक 20 में कानून, जो यहूदी लोगों की तरह अन्यजातियों को बचाने की अनुमति देता है, यहूदी लोगों के समान शब्द, श्लोक 22, और आप 10, 12 की तुलना कर सकते हैं।

सभी ने पाप किया है, पद 23। यहूदी लोग अधिकतर इससे सहमत थे। मेरा मतलब है, वे एक अपवाद बना सकते हैं।

कुछ ने कहा, ठीक है, शायद अब्राहम ने कभी कुछ नहीं किया या कुछ और, लेकिन वे सभी इस बात से सहमत थे कि उन्होंने ऐसा किया। रब्बी सहमत थे कि उन सभी ने पाप किया है। वास्तव में, कभी-कभी उनके पास कुछ रब्बियों के विशुद्ध रूप से अपमानजनक उद्देश्यों के लिए मज़ेदार कहानियाँ होती थीं जिन्होंने कुछ काम किए थे।

रब्बी अकीबा ने शैतान को एक खूबसूरत महिला के वेश में देखा, और शैतान एक ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया, इसलिए अकीबा ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया, शीर्ष के पास पहुंच गया, और शैतान ने अपना भेष उतार दिया और कहा, यदि आप रब्बी अकीबा नहीं होते और इतना सम्मानित होते भगवान, मैं तुम्हें लात मार कर मार डालूँगा। खैर, शायद यह सच्ची कहानी नहीं है, लेकिन मुद्दा यह था कि उन्होंने दर्शाया कि हर कोई कभी-कभी पाप करता है, यहाँ तक कि खतरनाक परिस्थितियों में ताड़ के पेड़ों पर चढ़ने की हद तक भी। इस प्रकार, चूँकि सभी ने स्वीकार किया कि सभी ने पाप किया है, यह यहूदी लोगों के बीच विवाद का विषय भी नहीं था।

इस प्रकार, पॉल कहते हैं, धार्मिकता, केवल मसीह में भगवान के उपहार के माध्यम से आती है, श्लोक 24 और 25। अब, पाप के सिद्धांतवादी काल के कारण, कई लोग श्लोक 23 में एडम का संकेत देखते हैं। यह कहता है, हम सभी ने पाप किया है, और सिद्धांतवादी को कभी-कभी समय का पाबंद समझा जाता है।

तो, अतीत में एक समय पर, यह पाप हुआ था। तो, यह आदम का पाप है। हालाँकि, ग्रीक में हाल के अध्ययनों से पता चला है कि आप हमेशा किसी सिद्धांतवादी को इस तरह से नहीं लेते हैं।

यह हमेशा केवल समय का पाबंद नहीं होता। यह कार्रवाई को बाहर से देखने का एक तरीका हो सकता है, और किसी भी मामले में, यह सिर्फ आदम का पाप नहीं है, हालाँकि इसके कारण हैं, क्योंकि आप इसे बाद में सामने लाने जा रहे हैं एडम. लेकिन पॉल 2:12 में यहूदी और अन्यजातियों के बारे में एक साथ बात कर रहा है, और कह रहा है कि उन्होंने एक ही तरह की भाषा का उपयोग करते हुए पाप किया है।

लेकिन पॉल ने बाद में 5:12, 14, और 16 में आदम के संदर्भ में इसे उजागर किया। ईश्वर की छवि में बनी मानवता ने वह महिमा खो दी। 1:23, 1 कुरिन्थियों 11:7, और वह महिमा मसीह में पुनर्स्थापित हुई है, रोमियों 8:18, 21, और 29।

क्या इसमें एडम की ओर कोई संकेत है? खैर, हो सकता है कि वह बाद में जो कहने जा रहा है उसके लिए रास्ता तैयार कर रहा हो। और इसलिए, हम इसे बाद में सुन सकते हैं। मुझे नहीं

लगता कि वह यहां उस बिंदु पर जोर दे रहा था, और मुझे नहीं लगता कि हम इसे विशेष रूप से क्रिया से प्राप्त करते हैं।

लेकिन किसी भी मामले में, कुछ विद्वानों ने 24 और 25 के हिस्सों में पूर्व-पॉलिन परंपरा के लिए तर्क दिया है। कई लोग इसे एक पंथ या भजन के रूप में देखते हैं। और मैंने इसका उल्लेख नहीं किया, लेकिन अध्याय एक, श्लोक तीन और चार में, कई लोगों ने इसे एक पंथ कथन या भजन के रूप में भी देखा।

यहां कई शब्द पॉल में दुर्लभ हैं, और आपके पास अन्य नए नियम के पंथों में पाए जाने वाले व्याकरणिक तत्व हैं। हालाँकि, ये विशेषताएँ सामान्य रूप से उदात्त गद्य उदात्त अलंकारिक शैली में फिट बैठती हैं। जब लोग देवताओं के बारे में बात कर रहे थे, तो सामान्य ग्रीक भजन के लिए मीटर का कोई संकेत नहीं था।

तो, मुझे यकीन नहीं है कि हम कह सकते हैं, ठीक है, मुझे नहीं लगता कि हम कह सकते हैं कि ये ग्रीक भजन हैं। अब, क्या पॉल ने स्वयं इसकी रचना की? निश्चित रूप से उनके पास ऐसा करने का अलंकारिक कौशल था। 1 कुरिन्थियों अध्याय 13 इसका एक उदाहरण है।

हालाँकि, चाहे उन्होंने इसकी रचना की हो या चाहे उन्होंने कुछ शिक्षण का उपयोग किया हो जो इस रूप में व्यापक रूप से प्रसारित हुआ हो, चाहे वह उनके पास मौलिक हो या नहीं, यह पॉल के दृष्टिकोण को दर्शाता है, और इसीलिए वह इसका उपयोग करते हैं। खैर, जैसे-जैसे हम यहां से आगे बढ़ेंगे, हम शेष तीन में और चार और पांच में जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि यीशु हमारा उद्धारकर्ता है और यह कि उस पर निर्भर रहने के माध्यम से ही हम भगवान के साथ सही बने हैं।

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 2:1-3:23 पर सत्र 5 है।